International Journal of Trend in Scientific Research and Development (IJTSRD)
Volume 6 Issue 4, May-June 2022 Available Online: www.ijtsrd.com e-ISSN: 2456 – 6470

राजनीति शास्त्र में नारीवाद

Ram Kumar Gurjar

NET Qualified, Scholar (Political Science) IGNOU, New Delhi, India

सार

नारीवाद, राजनैतिक आन्दोलनों, विचारधाराओं और सामाजिक आंदोलनों की एक श्रेणी है, जो राजनीतिक, आर्थिक, व्यक्तिगत, सामाजिक और लैंगिक समानता को परिभाषित करने, स्थापित करने और प्राप्त करने के एक लक्ष्य को साझा करते हैं। इसमें महिलाओं के लिए पुरुषों के समान शैक्षिक और पेशेवर अवसर स्थापित करना शामिल है।

नारीवादी सिद्धांतों का उद्देश्य लैंगिक असमानता की प्रकृति एवं कारणों को समझना तथा इसके फलस्वरूप पैदा होने वाले लैंगिक भेदभाव की राजनीति और शक्ति संतुलन के सिद्धांतों पर इसके असर की व्याख्या करना है। स्त्री विमर्श संबंधी राजनैतिक प्रचारों का ज़ोर, प्रजनन संबंधी अधिकार, घरेलू हिंसा, मातृत्व अवकाश, समान वेतन संबंधी अधिकार, यौन उत्पीड़न, भेदभाव एवं यौन हिंसा पर रहता है।

स्त्रीवादी विमर्श संबंधी आदर्श का मूल कथ्य यही रहता है कि कानूनी अधिकारों का आधार लिंग न बने।

आधुनिक स्त्रीवादी विमर्श की मुख्य आलोचना हमेशा से यही रही है कि इसके सिद्धांत एवं दर्शन मुख्य रूप से पश्चिमी मूल्यों एवं दर्शन पर आधारित रहे हैं। हालाँकि ज़मीनी स्तर पर स्त्रीवादी विमर्श हर देश एवं भौगोलिक सीमाओं मे अपने स्तर पर सक्रिय रहती हैं और हर क्षेत्र के स्त्रीवादी विमर्श की अपनी खास समस्याएँ होती हैं।

How to cite this paper: Ram Kumar Gurjar "Feminism in Political Science" Published in International Journal of Trend in Scientific Research and Development (ijtsrd), ISSN: 2456-6470, Volume-6 | Issue-4, June 2022, pp.1744-1748, URL: www.ijtsrd.com/papers/ijtsrd50375.pdf

IJTSRD50375

Copyright © 2022 by author(s) and International Journal of Trend in Scientific Research and Development Journal. This is an Open Access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License (CC BY 4.0) (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0)

नारीवादी सिद्धांत, सैद्धांतिक या दार्शनिक क्षेत्रों में नारीवाद का विस्तार है। इसमें नृविज्ञान, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, महिला अध्ययन, साहित्यिक आलोचना,, कला इतिहास, मनोविश्लेषण और दर्शन जैसे कई अंतर्गत विषय शामिल है। नारीवादी सिद्धांत का लक्ष्य लैंगिक असमानता को समझना है और लैंगिक राजनीति, शक्ति संबंधों और लैंगिकता पर ध्यान केंद्रित करना है। इन सामाजिक और राजनीतिक संबंधों की आलोचना करते हुए, नारीवादी सिद्धांत का ज्यादातर हिस्सा महिलाओं के अधिकारों और हितों को बढ़ावा देने पर केंद्रित है। नारीवादी सिद्धांत में खोजे गए विषयों में भेदभाव, रूढ़िवादिता, वस्तुनिष्ठता (विशेष रूप से यौन वस्तुकरण), उत्पीड़न और पितृसत्ता शामिल हैं। साहित्यिक आलोचना के क्षेत्र में, ऐलेन शोलेटर ने तीन चरणों वाले नारीवादी सिद्धांत के विकास का वर्णन किया है। पहले वह "नारीवादी आलोचना" कहती है, जिसमें नारीवादी पाठक साहित्यिक घटनाओं के पीछे की विचारधाराओं की जांच करती है। दूसरे को शॉल्डर "गाइनोक्रिटिसिज्म" कहती है, जिसमें "महिला पाठात्मक अर्थ की निर्माता है"। आखिरी चरण को वे "लिंग सिद्धांत" कहती है, जिसमें "वैचारिक शिलालेख और यौन/लिंग प्रणाली के साहित्यिक प्रभाव का पता लगाया जाता है"।

यह 1970 के दशक में फ्रांसीसी नारीवादियों द्वारा लिखा गया था, जिन्होंने क्रीचर फेमिनाइन (जो 'महिला या स्त्री लेखन' के रूप में अनुवादित है) की अवधारणा विकसित की थी। हेलेन सिक्सस का तर्क है कि लेखन और दर्शन एक दूसरे के साथ-साथ फुलेउरेंथ्रिक हैं और अन्य फ्रांसीसी नारीवादियों जैसे लुस इरिगेराय ने "शरीर से लेखन" को एक विध्वंसक अभ्यास के रूप में महत्व दिया है। एक नारीवादी मनोविश्लेषक और दार्शनिक, और ब्राचा एटिंगर, कलाकार और मनोविश्लेषक, जूलिया क्रिस्टेवा के काम ने विशेष रूप से नारीवादी सिद्धांत को प्रभावित किया है और विशेष रूप से नारीवादी साहित्यिक आलोचना। हालांकि, जैसा कि विद्वान एलिजाबेथ राइट बताते हैं, "इनमें से कोई भी फ्रांसीसी नारीवादी खुद को नारीवादी आंदोलन के साथ संरेखित नहीं करती है जैसा कि अंग्रेजीभाषी दुनिया में दिखाई दिया था"। अधिकतर हालिया नारीवादी सिद्धांत, जैसे कि लिसा ल्यूसिल ओवेन्स द्वारा नारीवाद को सार्वभौमिक मुक्ति आंदोलन के रूप में चित्रित करने पर ध्यान केंद्रित किया है।

परिचय

नारीवाद की कुछ शाखाएँ बृहद समाज के राजनीतिक झुकाव को बारीकी से नजर रखती हैं, जैसे उदारवाद और रूढ़िवाद, या पर्यावरण पर ध्यान केंद्रण। उदारवादी नारीवाद, समाज की संरचना को बदले बिना राजनीतिक और कानूनी सुधार के माध्यम से पुरुषों और महिलाओं की व्यक्तिवादी समानता की तलाश करता है। (कैथरीन रोटेनबर्ग) ने तर्क दिया है कि उदारवदी नारीवाद में नवउदारवादी चोले द्वारा नारीवाद के उस स्वरूप को सामूहिकता के बजाय व्यक्तिगत रूप से अलग-अलग किया जा रहा है और सामाजिक असमानता से अलग हो रहे है। इसके कारण वह तर्क देती है कि उदारवादी नारीवाद पुरुष प्रभुत्व, शक्ति या विशेषाधिकार की संरचनाओं के किसी भी निरंतर विश्लेषण की पेशकश नहीं कर सकता है। रोज़मेरी

हेनेसी और क्रिस इंग्राहम का कहना है कि नारीवाद का भौतिकवादी रूप पश्चिमी मार्क्सवादी विचार से विकसित हुआ हैं, [1,2] और कई अलग-अलग (लेकिन अतिव्यापी) आंदोलनों के लिए प्रेरित किया है, जो सभी पूंजीवाद की आलोचना में शामिल हैं और महिलाओं के लिए विचारधारा के संबंधों पर केंद्रित हैं। मार्क्सवादी नारीवाद का तर्क है कि पूंजीवाद महिलाओं के उत्पीड़न का मूल कारण है, और घरेलू जीवन और रोजगार में महिलाओं के खिलाफ भेदभाव पूंजीवादी विचारधाराओं का एक परिणाम है। सारा अहमद का तर्क है कि अफ्रीकी मूल का और उत्तर-औपनिवेशिक नारीवाद "पश्चिमी नारीवादी विचार के कुछ आयोजन परिसरों" के लिये एक चुनौती पेश करती है। अपने अधिकांश इतिहास के दौरान, पश्चिमी यूरोप और उत्तरी अमेरिका की मध्यम वर्ग की श्वेत महिलाओं द्वारा नारीवादी आंदोलनों और सैद्धांतिक विकास का नेतृत्व किया गया था। हालाँकि अन्य जातियों की महिलाओं ने वैकल्पिक नारीवाद का प्रस्ताव रखा है। 1960 के दशक में संयुक्त राज्य अमेरिका में नागरिक अधिकारों के आंदोलन और अफ्रीका, कैरिबियन, लैटिन अमेरिका के कुछ हिस्सों और दक्षिण पूर्व एशिया में यूरोपीय उपनिवेशवाद के पतन के साथ इस प्रवृत्ति में तेजी आई। उस समय से, विकासशील देशों और पूर्व उपनिवेशों में रहने वाली महिलाएं, जो रंग या विभिन्न जातीयता की हैं या गरीबी में रह रही हैं, ने अतिरिक्त नारीवाद का प्रस्ताव दिया है। बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में विभिन्न नारीवादियों ने तर्क दिया कि लिंग की भूमिका सामाजिक रूप से निर्मित है, और यह कि संस्कृतियों और इतिहासों में महिलाओं के अनुभवों को सामान्य बताना असंभव है। उत्तर-संरचनात्मक नारीवाद, उत्तर-संरचनावाद और विखंडन के दर्शन पर बहस करने के लिए यह तर्क देता है कि लिंग की अवधारणा सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से प्रवचन के माध्यम से बनाई गई है। उत्तर आधुनिक नारीवादियों ने लिंग के सामाजिक निर्माण और वास्तविकता की विवेकी प्रकृति पर भी जोर दिया।[3,4]

ट्रांसजेंडर लोगों पर नारीवादी विचार भिन्न हैं। कुछ नारीवादी ट्रांस महिलाओं को महिलाओं के रूप में नहीं देखते हैं, उनका मानना है कि जन्म के समय उनके लिंग के कारण उन्हें अभी भी पुरुष विशेषाधिकार प्राप्त है। इसके अतिरिक्त, कुछ नारीवादी "ट्रांसजेंडरवाद" को विचारों के कारण अस्वीकार करते हैं कि लिंग के बीच सभी व्यवहारिक मतभेद समाजीकरण का परिणाम हैं। इसके विपरीत, कई नारीवादियों और ट्रांसनारीवादियों का मानना है कि लिंग परिवर्तित महिलाओं की मुक्ति नारीवादी लक्ष्यों का एक आवश्यक हिस्सा है। नारीवाद की तीसरी लहर, ट्रान्स अधिकारों का अधिक समर्थन करते हैं। ट्रांसनारीवाद में एक प्रमुख अवधारणा ट्रांसस्त्रीद्वेष की है, जहाँ लिंग परिवर्तित महिलाओं या स्त्रीलिंग लिंग गैर अनुरूपता के प्रति तर्कहीन डर, घृणा, या भेदभाव किया जाता है। लोगों के विभिन्न समूहों की नारीवाद को लेकर अपनी-अपनी प्रतिक्रिया है, और इसके समर्थकों और आलोचकों में दोनों पुरुष और महिलाएं शामिल हैं। अमेरिकी विश्वविद्यालय के छात्रों का, जिनमें दोनो लड़के और लड़कियाँ दोनो शामिल है, स्वंय को नारीवादी के रूप में बताने के बजाय नारीवादी विचारों को लेकर समर्थन करना अधिक सामान्य है।[5,6]

विगत कुछ वर्षों में स्त्री द्वारा पुरुष के साथ समानता की खोज एक सार्वभौमिक तथ्य बन चुकी है। इस माँग के कारण कुछ नारी संगठनों ने नारियों में चेतना जाग्रत करने और उनकी स्थिति में सुधार जाने की दृष्टि से प्रयत्न किये हैं। मध्यम वर्गीय महिलाओं ने कीमतों में निरन्तर वृद्धि के मुद्दे को उठाया है और घरेलू स्त्रियों ने पुरुषों के साथ समानता की माँग की है। सर्वप्रथम चेन्नई में भारतीय महिला संघ का गठन किया गया। इसके बाद विभिन्न महिला संगठनों के प्रयत्नों से देश में अखिल भारतीय महिला सम्मेलन की स्थापना की गई है। इस संगठन के अलावा विश्वविद्यालय महिला संघ, भारतीय ईसाई महिला मण्डल, अखिल भारतीय स्त्री शिक्षा संस्था एवं कस्तूरबा गाँधी स्मारक ट्रस्ट आदि स्त्री संगठनों ने स्त्रियों की नियोग्यताओं को दूर करने, सामाजिक कुरीतियों को समाप्त करने और स्त्री शिक्षा का प्रसार करने की दृष्टि से कार्य किया है। विश्वव्यापी स्तर पर भी नारियों की स्थिति में सुधार के लिये कुछ प्रयत्न किये गये हैं। नारी संगठनों के प्रयत्नों के परिणामस्वरूप नारियों की स्थिति में सुधार के लिये भारत अधिनियम पारित हुए हैं जैसे- हिन्दू विवाह अधिनियम, हिन्दू उत्तराधिकार अधिनिम, दहेज में कुछ प्रतिषेध अधिनियम आदि। यही नहीं कुछ अन्य संवैधानिक प्रयत्न भी किये गये हैं जिसमें पंचायत संस्थाओं और नगर पालिकाओं के चुनाव में एक तिहाई पद महिलाओं के लिये आरक्षित किये गये हैं तथा संसद में महिला आरक्षण विधेयक पर बहस निरन्तर जारी है। जिसमें विधानसभा और लोकसभा में एक तिहाई पद महिलाओं के लिये आरक्षित होने की बात कही गई है ताकि महिलायें निर्णय लेने की प्रक्रिया में शामिल हों और नीति निर्माण के स्तर पर उनकी सहभागिता रहे।[7,8]

इस प्रकार अधिकारों की दृष्टि से नारी और पुरुष में भेद करना उतना ही अनुचित है जितना लिंग के आधार पर भेदभाव करना। किसी भी सभ्य समाज में स्वतन्त्रता और अधिकार की दृष्टि से महिला और पुरुष में कोई भेद नहीं किया जाता है उन्हें समान अधिकार मिलना चाहिए जो एक सुसंस्कृत सुसभ्य समाज की कसौटी है।

नारीवादी न्याय नैतिकता एक है नारीवादी नैतिकता पर विचार जो कि साथ जुड़ता है, और अंततः रूपांतरित होता है, पारंपरिक सार्वभौमिक दृष्टिकोण आचार विचार.[1] नारीवादी नैतिकता के अधिकांश प्रकारों की तरह, नारीवादी न्याय नैतिकता यह देखती है कि मुख्य धारा के नैतिक विचारों से लिंग कैसे बचा है। मुख्यधारा की नैतिकता को पुरुष प्रधान कहा जाता है। हालाँकि, नारीवादी न्याय नैतिकता अन्य नारीवादी नैतिकता से काफी भिन्न है। नैतिकता का एक सार्वभौमिक सेट नारीवादी न्याय नैतिकता का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, नारीवादी न्याय नैतिकता "पतली" नैतिकता से "मोटी" नैतिकता को विभाजित करने में स्पष्ट है। अन्य नैतिक दृष्टिकोण जो संस्कृति या अन्य घटनाओं के माध्यम से एक दूसरे से अलग समूहों द्वारा खुद को परिभाषित करते हैं, उन्हें नैतिकता के "मोटे" खातों के रूप में माना जाता है। नारीवादी न्याय नैतिकता का दावा है कि नैतिकता के "मोटे" खातों, नैतिकता के "पतले" खातों के विपरीत, वैध नारीवादी आलोचना को मिटाने के लिए आंतरिक रूप से प्रवण हैं[9,10]

विचार-विमर्श

प्रो-फेमिनिज़्म, उन नारीवाद के समर्थन को कहते है जोकि नारीवादी आंदोलन के सदस्य नहीं होते है। इस शब्द का उपयोग

अक्सर उन पुरुषों के संदर्भ में किया जाता है जो नारीवाद का सक्रिय समर्थन करते हैं। नारी-समर्थक पुरुष समूहों की गतिविधियों में स्कूलों में लड़कों और युवा पुरुषों के साथ हिंसा रोकने जैसे कार्य, कार्यस्थलों में यौन उत्पीड़न कार्यशालाओं की पेशकश करना, सामुदायिक शिक्षा अभियान चलाना और हिंसा में लिप्त पुरुष अपराधियों की काउंसलिंग शामिल है। प्रो-फेमिनिस्ट पुरुष, पुरुषों के स्वास्थ्य सम्बंधित कार्यक्रम जैसे: पोर्नोग्राफी के खिलाफ सक्रियता, जिसमें पोर्नोग्राफी विरोधी कानून, पुरुषों का अध्ययन और स्कूलों में लिंग इक्विटी पाठ्यक्रम का विकास आदि में भी शामिल होते है। कभी-कभी नारीवादी और महिला संगठन साथ आकर, घरेलू हिंसा और बलात्कार संकट केंद्रों में सहयोग करते है। प्रथम-तरंग नारीवाद (अंग्रेज़ी: First wave feminism- फर्स्ट-वेव फेमिनिज्म) नारीवादी गतिविधि से सम्बंधित एक सोच और दौर था जो 19 वीं और 20 वीं शताब्दी के दौरान पूरी पश्चिमी दुनिया में चला। यह कानूनी मुद्दों पर केंद्रित था, मुख्य रूप से मतदान का अधिकार प्राप्त करने पर।

द फर्स्ट-वेव शब्द मार्च 1968 में द न्यूयॉर्क टाइम्स मैगज़ीन में मार्था लियर द्वारा लिखा गया था, जिन्होंने उसी समय " सेकंड-वेव फेमिनिज्म " शब्द का भी इस्तेमाल किया था। उस समय, महिला आंदोलन को वास्तविक (अनौपचारिक) असमानताओं पर केंद्रित किया गया था, जो उसे पहले के नारीवादियों के उद्देश्यों से अलग करता है।

प्रथम तरंग नारीवाद का आरम्भ करने का श्रेय इंग्लैंड की मैरी वोलस्टोनक्राफ़्ट को जाता है। जो रेनेसां और ख़ासकर फ़्रांसीसी दार्शनिक रूसो से प्रेरित थीं।

द्वितीय तरंग नारीवाद नारीवादी गतिविधि का एक दौर और विचार है। इसका आरम्भ संयुक्त राज्य में 1960 के दशक की शुरुआत में हुआ और यह लगभग दो दशक तक चला। जल्द ही यह समूची पश्चिमी दुनिया में फैल गया। इसका उद्देश्य महिलाओं के लिए समानता बढ़ाना था, न कि केवल मतदान का अधिकार दिलाना।[11,12]

जहाँ प्रथम-तरंग नारीवाद का ध्यान मुख्य रूप से मताधिकार और लैंगिक समानता प्राप्त करने की राह में आने वाली कानूनी बाधाएँ पार करने (जैसे, अधिकार मतदान और संपत्ति के अधिकार) पर केंद्रित था, द्वितीय-तरंग नारीवाद ने बहस का दायरा बढ़ाकर व्यापक मुद्दों (जैसे परिवार, कार्यस्थल, कामुकता, प्रजनन अधिकार, वास्तविक असमानताएं, और आधिकारिक कानूनी असमानताएं) को प्राथमिकता दी। द्वितीय तरंग नारीवाद ने घरेलू हिंसा और वैवाहिक बलात्कार के मुद्दों पर भी ध्यान आकर्षित किया, बलात्कार-संकट केंद्रों (rape crisis centres) और महिलाओं के आश्रय स्थल बनाए और हिरासत कानूनों और तलाक कानूनों में बदलाव लाया। नारीवादी-स्वामित्व वाली किताबों की दुकान, क्रेडिट यूनियनों और रेस्तरां आंदोलन की प्रमुख बैठक स्थानों और आर्थिक इंजन थे। कई इतिहासकार अमेरिका में द्वितीय-तरंग नारीवाद युग को 1980 के दशक की शुरुआत में कामुकता और पोर्नोग्राफी जैसे नारीवादी सेक्स युद्धों के अंतर-नारीवाद विवादों के साथ समाप्त होने के रूप में देखते हैं, जो 1990 के दशक की शुरुआत में तृतीय-तरंग नारीवाद के दौर में शुरू हुआ था। ।

1963 में द सेकेंड सेक्स से प्रभावित होकर बैटी फ़्रीडन (Betty Friedan) ने बेस्टसेलिंग किताब द फेमिनीन मिस्टिक (The Feminine Mystique) लिखी। मुख्य रूप से श्वेत महिलाओं पर चर्चा करते हुए, उन्होंने स्पष्ट रूप से इस बात पर आपत्ति जताई कि मुख्यधारा की मीडिया में महिलाओं को कैसे चित्रित किया गया, कैसे उन्हें घर पर रखने से उनकी संभावनाओं को सीमित कर दिया गया और उनकी क्षमताओं को बर्बाद कर दिया गया। उसने स्मिथ कॉलेज के अपने पुराने सहपाठियों का उपयोग करके एक बहुत ही महत्वपूर्ण सर्वेक्षण किया। इस सर्वेक्षण में पता चला है कि घर पर रहने वाली महिलाओं (गृहिणियों) की तुलना में काम पर जाने के साथ घर सम्भालने वाली महिलाएँ अपने जीवन से अधिक संतुष्ट थीं। घर पर रहने वाली महिलाओं ने व्याकुलता और दुख की भावनाएँ दर्शाईं। इससे बैटी ने यह निष्कर्ष निकाला कि इनमें से कई दुखी महिलाओं ने खुद को इस विचार में डुबो दिया था कि उनकी घर के बाहर कोई महत्वाकांक्षा नहीं होनी चाहिए। फ्रीडन ने इसे "द प्रॉब्लम दैट हैज़ नो नेम" (The Problem That Has No Name") के रूप में वर्णित किया है। बैटी के मुताबिक़ एक अच्छे एकल परिवार की छवि, जैसी उस समय चित्रित की गई थी, और जिसे दृढ़ता से बढ़ावा दिया गया था, असल में महिलाओं की खुशी को प्रतिबिंबित नहीं करती थी, बल्कि उनके के लिए अपमानजनक थी। इस पुस्तक को संयुक्त राज्य अमेरिका में द्वितीय-तरंग नारीवाद शुरू करने के लिए व्यापक रूप से श्रेय दिया जाता है। [13]

परिणाम

द्वितीय-तरंग नारीवाद की शुरुआत का अध्ययन उन दो शाखाओं को देखकर किया जा सकता है जो इस आंदोलन से निकली हैं: उदारवादी नारीवाद और कट्टरपंथी नारीवाद। उदारवादी नारीवादियों- जैसे बैटी फ़्रीडन (Betty Friedan) और ग्लोरिया स्टाइनम (Gloria Steinem), ने ऐसे कानून पारित करने की वकालत की, जिनसे महिलाओं के व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन को बढ़ावा मिले। वहीं दूसरी ओर, केसी हेडन (Casey Hayden) और मैरी किंग (Mary King) जैसी कट्टरपंथी नारीवादियों ने वे कौशल और सबक अपनाए, जो उन्होंने नागरिक अधिकार संगठनों जैसे कि स्टूडेंट्स फॉर ए डेमोक्रेटिक सोसाइटी और स्टूडेंट अहिंसक समन्वय समिति के साथ काम से सीखे थे। नागरिक अधिकार आंदोलन के साथ काम करने के दौरान महिलाओं के हिंसक और यौनवादी मुद्दों पर बात करने के लिए एक मंच भी स्थापित किया। नारीवादी कार्यकर्ताओं ने नारीवादी व्यवसायों की एक श्रृंखला स्थापित की है, जिसमें महिलाओं के बुकस्टोर्स, नारीवादी क्रेडिट यूनियन, नारीवादी प्रेस, नारीवादी मेल-ऑर्डर कैटलॉग, नारीवादी रेस्तरां, और नारीवादी रिकॉर्ड लेबल शामिल हैं। ये व्यवसाय 1970, 1980 और 1990 के दशक में द्वितीय-तरंग और तृतीय-तरंग नारीवाद के हिस्से के रूप में फले-फूले। दूसरी-लहर की नारीवादियों ने लोकप्रिय संस्कृति को लिंगभेदी के रूप में देखा, और इसका मुकाबला करने के लिए खुद की पॉप संस्कृति बनाई। "द्वितीय-तरंग नारीवाद की एक परियोजना महिलाओं की 'सकारात्मक' छवियां बनाना था, जो उस समय की लोकप्रिय छवियों को टक्कर देने का कार्य करती थी और महिलाओं की उनके उत्पीड़न की चेतना को बढ़ाती थी।"

1960 में जन्म नियंत्रण के उपयोग के लिए खाद्य और औषधि प्रशासन के अनुमोदन के बारे में बात करने की आवश्यकता को खोजने के लिए, उदारवादी नारीवादियों ने यौन सक्रिय महिलाओं के बीच मातृत्व और बच्चे पालने की चेतना को बढ़ावा देने और उन्हें जागरूक बनाने के लिए लक्ष्य के साथ पैनल और कार्यशालाएँ स्थापित कीं । इन कार्यशालाओं ने वंक्षण रोगों और सुरक्षित गर्भपात जैसे मुद्दों पर भी ध्यान आकर्षित किया। [13] यौन सक्रिय महिलाओं के बीच जागरूकता बढ़ाने के लिए कट्टरपंथी नारीवादी भी इस आंदोलन में शामिल हो गए। 1960 के दशक के अंत और 1970 के दशक की शुरुआत में "फ्री लव मूवमेंट" का समर्थन करते हुए, कॉलेज परिसरों में युवा महिलाओं ने जन्म नियंत्रण, यौन रोगों, गर्भपात और सहवास पर पैम्फलेट वितरित किए।[12,13]

द्वितीय-तरंग नारीवादी आंदोलन ने भी घर और कार्यस्थल दोनों में शारीरिक हिंसा और यौन उत्पीड़न के खिलाफ कड़ा रुख अपनाया। 1968 में, NOW ने सफलतापूर्वक 1964 के नागरिक अधिकार अधिनियम के शीर्षक VII में संशोधन पारित करने के लिए समान रोजगार अवसर आयोग (EEOC) की सफलतापूर्वक पैरवी की, जिससे कार्यस्थल में लिंगभेद में कमी आई। कार्यस्थल में महिलाओं के अधिकारों पर इस वेग ने EEOC को "भेदभाव पर दिशानिर्देश" में यौन उत्पीड़न को जोड़ने के लिए प्रेरित किया। इससे महिलाओं को यौन उत्पीड़न के कृत्यों के लिए अपने सीनियर और सहकर्मियों को रिपोर्ट करने का अधिकार मिला।

निष्कर्ष

नारीवाद शब्द का प्रयोग सामान्यतया उस विचारधारा और आन्दोलन के लिये किया जाता है जिसका उद्देश्य सदियों से चले आ रहे पुरुष प्रधान समाज में महिलाओं को मुक्ति दिलाना है। नारीवाद एक ऐसा विश्वव्यापी आन्दोलन है जो समकालीन में नारी की अधीनस्थ और अवपीड़ित स्थिति को समाप्त करके उन्हें पुरुष के समकक्ष स्थान दिलाने का आकांशी है। आधुनिक नारीवादी चिन्तन का प्रारम्भ 18वीं शताब्दी के अन्तिम वर्षों से माना जाता है। 19वीं शताब्दी से लेकर अभी तक के वर्षों में नारीवादी गतिविधियों के अनेक रूप प्रकट हुए हैं। इसे विद्वानों ने 'नारीवाद की लहरों के नाम से सम्बोधित किया है। नारीवाद की पहली लहर का समय 19वीं शताब्दी के मध्य से लेकर 20वीं शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षों तक माना जाता है जबकि दूसरी लहर जिसे उग्र महिलावाद के नाम से जाना जाता है का समय 60 के दशक के अन्तिम वर्षों में माना जाता है। साठ के दशक में उपजे नारीवाद का मुख्य उद्देश्य यह प्रदर्शित करता था कि सभी महिलायें एक ही प्रकार के शोषण का शिकार होती है परन्तु वर्तमान नारीवाद पुरुष प्रधान समाज में नारी की भिन्न-भिन्न स्थिति की चर्चा तो करता ही है, साथ ही महिला के आपसी सम्बन्धी की भी विवेचना करता है।[11,12]

नारीवाद वह विचारधारा है जो नारी को उसका खोया हुआ स्थान अति प्रतिष्ठा दिलाने की पक्षधर है। नारीवाद की अवधारणा का प्रयोग निम्नलिखित संदर्भों में किया जाता है-

1. यह एक सामाजिक राजनीतिक सिद्धान्त और व्यवहार है जो समस्त महिलाओं को पुरुषों के प्रभुत्व और शोषण से मुक्त कराने का आकाँक्षी है।
2. यह एक विचारधारा है जो सभी नारी द्वेषी विचारधाराओं और व्यवहारों के विपरीत है।
3. यह महिला की पुरुष के प्रति अधीनता और महिला के विश्वव्यापी उत्पीड़न की प्रकृति से सम्बन्धित एक दार्शनिक सिद्धान्त है।
4. यह एक सामाजिक आन्दोलन है जिसका आधार स्त्री-पुरुष संघर्ष है।

वैसे देखा जाये तो प्रारम्भिक नारीवाद की शुरूआत जॉनलॉक के प्राकृतिक अधिकारों की अवधारणा से होती है। जे. एस. मिल ने अनेक तकों के आधार पर महिलाओं को पुरुषों के समान अवसर देने का प्रबल समर्थन किया। बूबोयर तथा बैटीफ्रीडन जैसे लेखकों ने आगे चलकर महिला आन्दोलन को प्रखर बनाया। नारीवाद सामान्यतया वह विचारधारा और आन्दोलन है जिसका उद्देश्य है जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में महिलाओं को पुरुषों के बराबर स्थान प्राप्त हो । परम्परागत रूप से और समकालीन जीवन में भी महिलाओं को अधीनस्थ और अवपीड़ित स्थिति ही प्राप्त है। नारीवाद का लक्ष्य है इस अधीनस्थ और अवपीड़ित स्थिति को समाप्त कर उन्हें परिवार, समाज, राज्य और समूचे विश्व के स्तर पर पुरुष के समकक्ष स्थान दिलाना। इस प्रकार एक पंक्ति में नारीवाद, नारी समानता (पुरुष से समानता), नारी एकता और नारी सशक्तिकरण का आन्दोलन है। नारीवाद की मांग है कि नारी को अपना हक (समानता का हक), अपने अधिकार और अपना स्वतन्त्र व्यक्तित्व चाहिए। नारीवाद एक विश्वव्यापी आन्दोलन है, कुछ देशों में यह अपने विकास के उच्च स्तर पर है, कुछ देशों में अपेक्षाकृत कम विकसित स्तर पर। सिमोन दिबोवा की प्रसिद्ध पुस्तक The Second Sex में विस्तार में बतलाया गया है कि स्त्री-पुरुष का भेद समाजीकरण का परिणाम है। समाजीकरण (समाज से जुड़े समस्त वातावरण) से उत्पन्न इस स्थिति को दूर कर समान व्यक्तियों के लिए समान अधिकारों की अधिकार के रूप में मांग नारीवाद है।[10,11]

नारीवाद के प्रमुख लक्षण या विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

1. नारीवाद मैरिज सिस्टम या विवाह संस्कार (एक स्त्री और एक पुरुष के बीच काम सम्बन्धों को मर्यादित करने की व्यवस्था) और परिवार संस्था का विरोधी नहीं है वरन् इस बात पर बल देता है कि परिवार का मूल आधार पुरुष के प्रति स्त्री का समर्पण नहीं वरन् पुरुष और स्त्री दोनों का एक-दूसरे के प्रति समर्पण और पति-पत्नी के बीच समानता या स्त्री-पुरुष की समानता होनी चाहिए नारीवाद पुरुष को धिक्कारना नहीं है, पुरुष को अस्वीकार करना नहीं है पुरुष को केवल समानता, पूर्ण समानता के आधार पर स्वीकार करना है। नारीवाद विवाह विरोधी या परिवार विरोधी तो नहीं है, लेकिन इस बात पर अवश्यक ही बल देता है कि विवाह और परिवार नारी के लिए केवल उतनी ही सीमा तक आवश्यक है, जितना सीमा तक यह पुरुष के लिए आवश्यक है।
2. नारीवाद इस बात पर बल देता है कि योग्यता और क्षमता की दृष्टि से, नारी किसी भी रूप में पुरुष से कम श्रेष्ठ नहीं है तथा उसे आवश्यक शिक्षा, ज्ञान और प्रशिक्षण प्राप्त कर प्रतियोगी जीवन के सभी क्षेत्रों में पुरुषों के समान स्तर पर कार्य करने का अधिकार होना चाहिए। वह पुरुष से

प्रतियोगिता करने की क्षमता रखती है तथा उसे यह अधिकार प्राप्त है।

3. नारीवाद इस बात पर बल देता है कि राजनीति में नारी को लगभग बराबरी की भागीदारी (कम से कम एक-तिहाई भागीदारी अवश्य ही) प्राप्त होनी चाहिए। महिलाएँ न केवल राजनीति में भाग लेने की योग्यता और क्षमता रखती है वरन् वे इस कार्य के लिए पुरुषों की तुलना में अधिक योग्य और सक्षम हैं। राजनीतिक क्षेत्र में श्रीमति गांधी, श्रीमती भण्डारनायके, माग्रेट थैचर और गोल्डा मायर आदि महिलाओं ने जिस सुयोग्य नेतृत्व का परिचय दिया, उससे यह बात प्रमाणित हो जाती है।[9,10]
4. नारीवाद इस बात पर बल देता है कि यदि नारी को उत्थान और विकास कि दिशा में आगे बढ़ना है तो यह कार्य नारी एकता और संगठन तथा स्थानीय प्रादेशिक, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर नारी-नारी सहयोग के आधार पर ही सम्भव है।

विभिन्न देशों के अधिकार पत्रों में नारी-पुरुषों के लिये समान अधिकार की बात कही गयी है। संयुक्त राष्ट्र शंघ द्वारा मानवीय अधिकारों का सार्वलौकिक घोषणापत्र स्वीकार किये हुए इतना अधिक समय व्यतीत हो चुका है लेकिन आज तक भी महिला वर्ग के हित और अधिकार सुरक्षित नहीं है। महिला वर्ग की इस गिरी हुई स्थिति के मूल कारण महिलाओं में शिक्षा का अभाव तथा आर्थिक आत्मनिर्भरता का अभाव है। इसके अतिरिक्त महिलाओं की स्थिति में सुधार के मार्ग में एक प्रमुख बाधक तत्व है- सामाजिक कट्टरता, धार्मिक कट्टरता, और अन्धविश्वास।[13]

संदर्भ

[1] बॉक्सर, मर्लिन जे और जीन एच। क्वार्टर्ट, एड। कनेक्टिंग सोफ़र्स: यूरोपियन वुमन इन ए ग्लोबलाइज़िंग वर्ल्ड, 1500 टू द प्रेज़ेंट (2000)

[2] कॉट, नैन्सी । कोई छोटा साहस नहीं: संयुक्त राज्य अमेरिका में महिलाओं का इतिहास (2004)

[3] फ्रीडमैन, एस्टेले बी । नो टर्निंग बैक: द हिस्ट्री ऑफ फेमिनिज्म एंड द फ्यूचर ऑफ वुमन (2003)

[4] Harnois, Catherine (2008). "Re-presenting feminisms: Past, present, and future". NWSA Journal. Johns Hopkins University Press. 20 (1): 120–145. JSTOR 40071255. मूल से 30 नवंबर 2015 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 7 जून 2019.

[5] मैकलीन, नैन्सी। द अमेरिकन वुमन मूवमेंट, 1945-2000: ए ब्रीफ हिस्ट्री विद डॉक्यूमेंट्स (2008)

[6] ऑफेन, करेन; पिरसन, रूथ रोच; और रेंडाल, जेन, एड। महिला इतिहास लेखन: अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य (1991)

[7] अप्रेंटिस, एलिसन और ट्रोफिमेंकोफ़, सुसान मान, एड। उपेक्षित बहुमत: कनाडा की महिला इतिहास में निबंध (2 खंड 1985)

[8] रामसैक, बारबरा एन।, और शेरोन सिवर्स, एड। एशिया में महिलाएँ: महिलाओं को इतिहास में पुनर्स्थापित करना (1999)

[9] रोसेन, रूथ । द वर्ल्ड स्प्लिट ओपन: मॉडर्न वीमेन मूवमेंट चेंजेड अमेरिका (द्वितीय संस्करण 2006)

[10] रोथ, बनिता। फेमिनिज्म के लिए अलग सड़कें: अमेरिका की दूसरी लहर में ब्लैक, चिकाना और व्हाइट फेमिनिस्ट मूवमेंट्स। कैम्ब्रिज, MA: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस (2004)

[11] स्टैंसल, क्रिस्टीन। फेमिनिस्ट प्रॉमिस: 1792 टू द प्रेजेंट (2010)

[12] Thébaud, Françoise (Spring 2007). "Writing women's and gender history in France: A national narrative?". Journal of Women's History. 19 (1): 167–172. डीओआइ:10.1353/jowh.2007.0026.

[13] ज़ोफी, एंजेला हॉवर्ड, एड। हैंडबुक ऑफ़ अमेरिकन वुमेन्स हिस्ट्री (दूसरा संस्करण 2000)